ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

जातीय साहित्य की प्रगति की पहचान और डॉ० रामविलास शर्मा–अनूप कुमार सिंह 4221

गाँधी जीवन-दर्शन में वैश्वीकरण की चुनौतियाँ का समाधान–डॉ० अग्निदेव 4224

भारत में विभिन्न युगो में शिक्षा व्यवस्था–डॉ0 अजीत यादव 4229

ग्रामीण क्षेत्र का आर्थिक विकास–गंगाराम 4232

राष्ट्रीय कल्याणकी प्रगति के लिए शिक्षा एक आवश्यक साधन–डॉ0 जितेन्द्र सिंह 4235

खुसरो के दमन में महावत खाँ की भूमिका–पंकज कुमार गुप्ता 4238

भगवद्वाल्मीकिचरितम् में अर्थालंकार-सौन्दर्य–डॉ० ललित कुमार गौड; निशा 4241

प्राचीन कालीन भारत में गणराज्यों की शासन व्यवस्था–बृजकेश यादव 4245

स्वाधीनता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका–डॉ० नीरज निरंजन 4249

भारत-बांग्लादेश एवं म्यांमार संबंध में बदलती हुई विश्व व्यवस्था–परमजीत राम 4252

प्राचीन भारत में भू-धारण पद्धति से उत्पन्न वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक परिवर्तन का वर्तमान सन्दर्भ –पवन कुमार सिंह; डॉ० विजय कुमार 4255

विभिन्न काल खण्डो में स्त्री विमर्श–पूनम तिवारी 4258

भारत में स्वास्थ्य की स्थिति एवं विकास–सरिता कुशवाहा 4261

कश्मीरी आतंकवाद और भारत की सुरक्षा समस्यायें–त्रिलोकी सोनी 4263

आतंकवाद: भारत-पाक के मध्य अन्तर्द्वनद–विनोद यादव 4266

रायपुर जिले के हाई स्कूल के सामान्य एवं अनुसुचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रीता सिंह 4269

जातीय साहित्य की प्रगति की पहचान और डॉ० रामविलास शर्मा

अनूप कुमार सिंह

सहायक आचार्य (हिन्दी), पी०पी०एन० महाविद्यालय, कानपुर

साहित्य का अस्तित्व समाज से अलग नहीं होता, इसलिए साहित्य का विकास समाज के विकास के साथ होता है। साहित्य सामाजिक रचना है, साहित्य कर्म की पूरी प्रक्रिया सामाजिक व्यवहार का एक विशिष्ट रूप है, इसलिए वह समाज के इतिहास के अनेक रूपों से जुड़ी होती है और व्यापक सामाजिक इतिहास का अंग भी होती है। साहित्य के इतिहास का एक प्रयोजन साहित्य के विकास की गति और दिशा का बोध कराना है। साहित्य की रचना और आलोचना की अधिकांश समस्याएं साहित्य के इतिहास की समस्याएं होती हैं, इसलिए साहित्य के इतिहास बोध से ही ऐसी समस्याओं के समाधान खोजे जा सकते हैं। साहित्य के बोध के लिए इतिहास बहुत आवश्यक है।

साहित्य के मूल्यांकन के लिए विवेकपूर्ण ऐतिहासिक दृष्टि का होना आवश्यक है। डॉ० रामविलास शर्मा की इतिहासदृष्टि मार्क्सवादी है, वह इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, साथ ही द्वंद्व न्याय के आधार पर सामाजिक विकास का विवेचन करते हैं एवं सामाजिक यथार्थ को महत्त्व देते हुए जनता के स्वर को पहचानने की कोशिश करते हैं। रामविलास शर्मा भक्तिकाव्य में सामंत विरोधी मूल्यों की तलाश करते हैं और सामंतवाद के विरोध में भक्ति आंदोलन का उद्‌भव मानते हैं। सामंतों और पूँजीवादी व्यवस्था में लिखे गए साहित्य के मूल प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी तत्त्वों की अलग-अलग पहचान बनाते हैं। विचारों का मूल स्रोत वे सामाजिक जीवन में खोजते हैं।

मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं- "भक्ति काव्य को जातीय उत्थान के व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन की अभिव्यक्ति मानते हुए उन्होंने उसके सामंतवाद विरोधी और मानवतावादी स्वरूप का विवेचन किया है।"[1] रामविलास शर्मा ने प्रगतिशील आंदोलन पर जितना लिखा उससे प्रगतिशील आंदोलन के महत्त्व को समझने में सहायता मिलती है। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि- "किसी भाषा के साहित्य का इतिहास उस भाषा के इतिहास और उस भाषा का व्यवहार करने वाले समाज के इतिहास का अभिन्न अंग होता है। समाज, भाषा और साहित्य के इतिहास की प्रक्रियाओं के आपसी सम्बन्ध के बोध के बिना इनमें से किसी एक का इतिहास का पूरा ज्ञान नहीं हो सकता।[2] "रामविलास शर्मा ने हिंदी भाषा और हिंदी भाषा-भाषी समाज के इतिहास के बारे में स्वतंत्र चिंतन किया है। हिंदी भाषी समाज तथा हिंदी भाषा के जातीय स्वरूप के विकास से जुड़ी हुई जटिल समस्याओं पर नये ढंग से चिंतन करते हुए हिंदी साहित्य के जातीय रूप के आधार को स्पष्ट किया।"[3] हिंदी भाषा और साहित्य के जातीय स्वरूप की पहचान, खोज और रक्षा करना रामविलास शर्मा के लेखन का मुख्य विषय है। हिंदी साहित्य के जातीय रूप और विशेषताओं की समस्या ही उनकी इतिहास चिंता का मुख्य विषय है। यद्यपि रामविलास शर्मा से पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी भाषा के जातीय रूप को पहचाना था, लेकिन हिंदी भाषा के जातीय स्वरूप को हिंदी साहित्य इतिहास लेखन में प्रतिष्ठित करने का श्रेय रामविलास शर्मा को ही है। उन्होंने हिंदी जाति और हिंदी भाषा के गठन, निर्माण और विकास का विवेचन किया और हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की भी नयी जमीन तैयार की।

हिंदी साहित्य के इतिहास के पूरे ढाँचे को बदलने में रामविलास शर्मा की भूमिका अद्वितीय है। आचार्य शुक्ल आदिकाल और मध्यकाल को अलग रखते हैं। डॉ० रामविलास शर्मा दोनों को सामंती युग के अंतर्गत स्वीकार करते हुए एक मानते हैं। वे कहते हैं- "शुक्ल जी का आदिकाल वास्तविक मध्यकाल है, हिंदी जनपदों के इतिहास का सामंत काल है।"[4]

मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि रामविलास शर्मा की मान्यता है कि भारतीय समाज के इतिहास में वैदिक काल से पहले का काल गणसमाजों का काल है। वैदिक काल में 11वीं सदी तक सामंती समाज का काल है और 12वीं से सामंतवाद के विघटन तथा व्यापारी पूँजीवादी उदय के साथ आधुनिक काल आरम्भ होता है। राम विलास शर्मा के अनुसार 12वीं सदी से भारत में जातीय निर्माण, जातीय भाषाओं का विकास और जातीय साहित्य की रचना आरम्भ होती है। इस पर मैनेजर पाण्डेय सवाल उठाते हुए पूछते हैं इस आधार पर क्या 12वीं सदी से ही भारतीय समाज और साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल का आरम्भ माना जा सकता है? 12वीं सदी से आधुनिक काल का आरम्भ मानने पर भारतीय समाज और साहित्य के इतिहास के जितने सवाल हल होंगे, उससे अधिक जटिल सवाल उठ खड़े होंगे। इस मान्यता के अनुसार मुगल काल के लगभग 400 वर्ष पहले से अंग्रेजो के आने तक का काल भारत में सामंतवाद के विघटन का काल माना जाएगा। यही नहीं हिंदी साहित्य के इतिहास में केवल आधुनिक काल ही रह जाएगा। राम विलास शर्मा की दृष्टि में आदिकाल एक प्रकार से रीतिकाल का प्रथम उत्थान का काल कहा जा सकता है, क्योंकि अतिशयोक्ति पूर्ण कथन और चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृत्ति इस काल में भी प्रबल थी। कवि अपने आश्रयदाताओं के प्रशंसक थे। आचार्य शुक्ल ने जिसे पूर्व मध्यकाल कहा है उसे डॉ०शर्मा 'लोकजागरण काल' कहते हैं, क्योंकि "इस काल में सामंती ढाँचे के भीतर व्यापारिक पूँजीवाद के विकास के फलस्वरुप नए आर्थिक सम्बन्ध विकसित हो चुके थे और एक नयी सांस्कृतिक चेतना भारतीय कवियों के माध्यम से जागृत हो चुकी थी।"[5]

इस काल में हिंदी जाति का निर्माण हो चुका था। इसीलिए इस काल से ही डॉ० रामविलास शर्मा हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की शुरुआत मानते हैं। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं- "रामविलास शर्मा ने हिंदी जाति की संस्कृति और उसके जातीय साहित्य की जो व्याख्या की है, उससे कहीं कहीं वर्गीय आधार और विचारधारात्मक प्रभावों की ओर संकेत हैं, लेकिन कई बार उनकी उपेक्षा भी हुई है। वे भक्ति आंदोलन को जातीय उत्थान का सांस्कृतिक प्रतिबिम्ब कहते हैं। उसके काव्य के कुछ पक्षों के वर्गीय आधार को स्पष्ट भी करते हैं, लेकिन उसके भीतर के विचारधारात्मक अंतर्विरोधों की अपेक्षा करते हैं। कई बार परम्परा की रक्षा की भावना के कारण अंतर्विरोधों का तर्क जाल से ढकने की भी कोशिश करते हैं। हिंदी नवजागरण और उसके साहित्य के विश्लेषण में भी प्रायः यही पद्धति अपनायी गयी है।"[6] अपनी बात आगे बढ़ाते हुए पाण्डेय जी कहते हैं कि "यहाँ भी हिंदी नवजागरण और उसके साहित्य की प्रगतिशीलता सिद्ध करने की चिंता के कारण वर्गीय आधार और विचारधारात्मक अंतर्विरोध पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है।"[7]

शुक्ल जी ने भारतेंदु युग से आधुनिक युग का आरम्भ माना है। राम विलास शर्मा इसे लोक जागरण का दूसरा उत्थान मानते हैं। रामविलास शर्मा 12वीं सदी से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की शुरुआत मानते हैं।

मैनेजर पाण्डेय इस बात से सहमति जताते हुए कहते हैं- "12वीं सदी में हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ मानने पर हिंदी साहित्य के इतिहास से आदिकाल और मध्यकाल को निकाल देना होगा।"[8] उनकी चिंता इस बात पर है कि हिंदी साहित्य के लगभग 900 वर्षों के इतिहास के विभिन्न परिवर्तनों, मोड़ो और विकास की अवस्थाओं का अध्ययन कैसे होगा? पाण्डेय जी कहते हैं कि 12वीं सदी से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ मानने की धारणा के लिए सबसे बड़ी चुनौती रीतिकाल है। रीतिकाल के साहित्य का आधार और स्वरूप निस्संदेह सामंती है, उसे सामंत विरोधी आधुनिक काल के अंतर्गत कैसे शामिल किया जा सकता है? मैनेजर पाण्डेय कहते हैं कि "रामविलास शर्मा ने हिंदी जाति, हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के विकास की जो व्याख्या की है उससे रीतिकाल के अस्तित्व की पूरी व्याख्या नहीं होती है।"[9] 12वीं सदी से आधुनिक काल का आरम्भ मानने की धारणा के सामने प्रश्नचिन्ह बना हुआ है।

साहित्य के इतिहास लेखन में समाज और साहित्य के विशिष्ट सम्बन्ध की समझ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाज में संस्कृति तथा साहित्य का विशिष्ट सम्बन्ध 'आधार और अधिरचना' की मार्क्सवादी धारणा में व्यक्त होता है। डॉ० शर्मा साहित्य के सापेक्ष स्वायत्तता के कायल होते हुए भी इसके इतिहास को सामाजिक विकास के साथ रखकर देखते हैं, इसीलिए सामंतवादी सामाजिक ढाँचे के भीतर व्यापारिक पूँजीवाद के विकास के साथ आरम्भ होने वाली व्यापक सांस्कृतिक जागरण से ही वे आधुनिक काल की शुरुआत मान लेते हैं। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं- "रामविलास शर्मा ने विस्तार से सिद्ध किया है कि सामाजिक विकास से भाषा के विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सामाजिक क्रांति से भाषा के रूप में असाधारण परिवर्तन है।"[10] आगे पाण्डेय जी यह भी कहते हैं कि सच है कि एक भाषा का अस्तित्व एक से अधिक सामाजिक व्यवस्थाओं से हुआ है और यह भी सच है कि एक ही भाषा का प्रयोग शोषक और शोषित वर्ग अपने-अपने प्रयोजन के अनुसार करते हैं, लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं हो जाता की भाषा पूरी तरह सामाजिक विकास से मुक्त और वर्गों से परे है। भाषा को सामाजिक दुनिया तथा वर्गों से परे मारने का अर्थ है उसके केवल व्याकरणिक रूप को महत्त्व देना और उसके व्यावहारिक रूप की उपेक्षा करना।

मैनेजर पाण्डेय कहते हैं कि "डॉ० रामविलास शर्मा की आलोचना और इतिहास दृष्टि की बड़ी विशेषता हिंदी साहित्य की प्रगतिशील परम्पराओं की खोज, पहचान, रक्षा और व्याख्या है। प्रगतिशील साहित्य की समस्याओं पर विचार करते समय भी उनका मुख्य ध्यान हिंदी साहित्य की जातीय विशेषताओं की रक्षा पर ही रहा है। स्वतंत्रता के बाद के साहित्य का मूल्यांकन दूसरे समय परम्परा की रक्षा का भाव इतना प्रबल है कि वह एक, दो अपवादों को छोड़कर प्रायः वर्तमान साहित्य के प्रति आक्रामक रवैया अपनाते दिखाई देते हैं।"[11]

प्रगतिशील परम्परा की व्याख्या करते समय डॉ० शर्मा अंतर्विरोधों की उपेक्षा ही नहीं करते, बल्कि उनका ध्यान प्रगतिशील और प्रगति विरोधी प्रवृत्तियों के अंतर्विरोध पर रहा है, लेकिन प्रगतिशील परम्परा के भीतरी अंतर्विरोधों पर भी उनकी नजर रही है। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं- "उन्होंने भक्ति साहित्य के सामंतवाद विरोधी स्वरूप को महत्त्व देते हुए भी उसमें प्रकट मायावाद तथा निष्क्रियतावाद की ओर संकेत किया है। वे भारतेंदु युग के साहित्य में देशभक्ति के साथ राजभक्ति और स्वच्छंद प्रवृत्ति के साथ रीतिकालीन प्रभावों की मौजूदगी स्पष्ट करते हैं। आचार्य शुक्ल की आलोचना और इतिहास दृष्टि में मौजूद वस्तुवाद और भाव वाद के दर्द की ओर उन्होंने कई बार संकेत किया है। वे छायावाद के प्रबल समर्थक माने जाते हैं, लेकिन उन्होंने छायावादी रहस्यवाद की आलोचना की है।"[12] मैनेजर पाण्डेय डॉ०शर्मा की इतिहास दृष्टि के बारे में कहते हैं कि "रामविलास शर्मा हिंदी की प्रगतिशील परम्परा के अंतर्विरोध को देखते हैं, लेकिन वे उनकी ओर सिर्फ इशारा करके रह जाते हैं, विस्तृत विश्लेषण नहीं करते।"[13]

रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्य की प्रगतिशील परम्परा की रक्षा रूढ़िवादियों से ही नहीं की है, कुछ ऐसे प्रगतिवादियों से भी की है जो अतीत के बोझ से मुक्ति के नाम पर परम्परा के ऐतिहासिक बोध से भी मुक्त होते दिखायी देते हैं। डॉ० शर्मा ने प्रगतिशील परम्परा की रक्षा परम्पराद्रोही आधुनिकतावादियों से भी की है। मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं कि "आधुनिकतावादी जितना जोर से हिंदी साहित्य की प्रगतिशील परम्परा पर आक्रमण करते हैं, उससे अधिक शक्ति के साथ रामविलास शर्मा प्रगतिशील परम्परा की रक्षा का प्रयत्न करते हैं। आस्था और सौंदर्य के निबंध उनके ऐसे प्रयत्न के प्रमाण हैं।"[14]

नयी कविता के आधुनिकतावादी जन परम्परा की भ्रामक व्याख्या के साथ छायावाद को सामने रखते हैं तो डॉ० रामविलास शर्मा वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भक्तिकाल ,भारतेंदु युग, द्विवेदी युग और छायावाद की विवेक यात्रा करते हुए भारतीय साहित्य की परम्परा की प्रगतिशीलता सिद्ध करते हैं। मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है "रामविलास शर्मा ने परम्परा की रक्षा ही नहीं की, उन्होंने परम्परा की रक्षा के लिए दृष्टि दी।"[15]

हिंदी साहित्य की प्रगतिशील परम्परा की व्यापक स्वीकृति और पाठक के साहित्यविवेक के निर्माण का काम सरलता से नहीं हुआ। मैनेजर पाण्डेय उनके कठिन कार्य के प्रति कहते हैं- "रामविलास शर्मा ने हिंदी साहित्य के इतिहास से सम्बंधित अपनी अनेक मान्यताओं के लिए लगातार कठिन वैचारिक संघर्ष करके इस काम में दुर्लभ सफलता प्राप्त की है।"[16] आगे चलकर पाण्डेय जी उन्हीं के शब्दों को दोहराते हुए कहते हैं- "हिंदी के अनेक स्वीकृत मान्यताओं के पीछे एक संघर्ष है। मान्यताएं याद रहती हैं, संघर्ष हम भूल जाते हैं।"[17] उन्होंने प्रगतिशील परम्परा विरोधियों से संघर्ष किया है, परम्परा की उपेक्षा करने वाले अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष किया और परम्परा की विकृत व्याख्याओं के विरुद्ध भी मुखर आवाज उठायी।

सन्दर्भ

1. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 166
2. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 167
3. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 167
4. हिन्दी जाति का साहित्य, रामविलास शर्मा, पृ0सं0 122
5. हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार, रामचन्द्र तिवारी, पृ0सं0 110
6. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 181
7. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 181
8. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 171
9. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 173
10. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 173
11. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 193
12. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 194
13. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 194
14. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 196
15. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 196
16. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 204
17. साहित्य और इतिहास दृष्टि, प्रो0 मैनेजर पाण्डेय, पृ0सं0 205